ISSN: 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 7, अंक-1, अप्रैल 2019

संगीत में शोध पत्र लेखन के तकनीकी पहलू

डॉ. अमित कुमार वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत भवन विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्तिनिकेतन, प. बंगाल

Paper recieved on : June 02, 2019, Return : June 11, 2019, Accepted : June 13, 2019

सार-संक्षेप

शोध अपने आप में एक जटिल और बौद्धिक प्रक्रिया मानी जाती है और शोध पत्र लेखन उसी जटिल प्रक्रिया का हिस्सा है जो किए गए शोध कार्य का संक्षेप में स्पष्ट और सारगर्भित रूप प्रस्तुत करता है। प्राय: संगीत में शोध पत्र लेखन में उसके तकनीकी पक्षों ङ्क सन्दर्भ, भावानुवाद, उद्धरण, साइटेशन आदि पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है जिस कारण उनकी प्रमाणिकता संदिग्ध और गुणवत्ता कमजोर हो जाती है। इन्हीं सब तकनीकी पहलुओं को संगीत के संदर्भ में सरल रूप से उदाहरण देकर समझाने का प्रयास किया गया है, ताकि शोध पत्र की गुणवत्ता और उसकी प्रमाणिकता को बढ़ाने में सहायता प्राप्त हो सके।

मूल शब्द : सन्दर्भ, भावानुवाद, उद्धरण, शोध, संगीत

शोध-पत्र

एक अच्छे शोध पत्र के बहुत से गुण माने गए है। जैसे—शोध पत्र व्यवस्थित और अपने विषय पर केन्द्रित होना चाहिए। उसमे प्रयुक्त तथ्यों और कथ्यों की तार्किक व्याख्या होनी चाहिए। शोधपत्र अपने विषय में प्रासंगिक और उपयोगी होना चाहिए। वह Plagiarism से मुक्त हो साथ ही प्रमाणिक भी होना चाहिए आदि। उपरोक्त गुणों से युक्त शोध पत्र के लेखन में भावानुवाद, उद्धरण, सर्वमान्य एवं सर्वस्वीकृत सत्यों और कथ्यों आदि का प्रयोग करते हुए उस विषय से सम्बंधित अपना चिंतन और अपनी व्याख्या प्रस्तुत करते है, और उसका विश्लेषण करते हुए अंतत: निष्कर्ष तक पहुँचते है। यह शोध पत्र लेखन की सामान्य प्रक्रिया है। जिसका पालन लगभग सभी प्रकार के शोध पत्रों में होता है।

Paraphrasing

Paraphrasing या भावानुवाद वह प्रक्रिया है जो मूल स्रोत से लिए गए तथ्यों और कथ्यों में निहित अर्थों को बिना बदले लेखन को मौलिकता प्रदान करती है साथ ही उसका विस्तार भी करती है। सामान्य शब्दों में, किसी व्यक्ति या लेखक द्वारा व्यक्त की गए विचारों को अपने शब्दों में अपने तरीके व्यक्त करना भावानुवाद या Paraphrasing कहलाता है। यह व्यक्त किए गए विचार मौखिक या लिखित दोनों रूपों में हो सकते है। भावानुवाद के दौरान विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि मूल विचारों का स्वरूप व उनके उद्देश्यों में कहीं परिवर्तन न हो जाए अथवा वो नष्ट न हो जाए। किसी स्रोत से जुटाई गई सामग्री का भावानुवाद यह प्रकट करता है कि शोधार्थी ने स्रोत से प्राप्त जानकारी को उसके मूल रूप में समझा है और शोधार्थी ने उसे अपने शब्दों व शैली में प्रकट करने की क्षमता है। भावानुवाद लेखन में Quotation की अधिकता से भी बचाते है। भावानुवाद के साथ ही उसके मूल स्रोत का हवाला या उद्धरण (Reference) भी दिया जाना चाहिए ताकि Plagiarism से बचा जा सके।

भावानुवाद के अंतर्गत केवल लेखक के विचारों को अपने शब्दों में अपने तरीके व्यक्त करना होता है, न कि सूचनाओं को और विषय से सम्बंधित सर्वज्ञात तथ्यों और कथ्यों को। जैसे संगीत में सर्वज्ञात तथ्यों या जानकारियों के अंतर्गत निम्नलिखित बातों को उदाहरण स्वरूप समझ सकते है—नाट्यशास्त्र भरत के द्वारा प्रणीत ग्रन्थ है, क्रमिक पुस्तक मालिका पं. भातखंडे जी ने लिखी है, पं. रविशंकर, लता मंगेशकर...भारत रत्न से सम्मानित कलाकार है, संगीत का आधार स्वर और लय है, भारतीय संगीत राग प्रधान है, तीनताल 16 मात्रा की ताल है, राग का गुण रंजकता प्रदान करना है, ताल संगीत का प्राण है, उस्ताद जाकिर हुसैन अंतर्राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त तबला वादक है, आदि।

भावानुवाद आवश्यकतानुसार कम से कम शब्दों में अथवा अधिक से अधिक शब्दों में किया जा सकता है। भावानुवाद वाक्यों का तथा पैराग्राफदोनों का हो सकता है। वाक्यों के माध्यम से होने वाले भावानुवाद है—

मूल वाक्य—''वर्ष 1974 में बेगम अख्तर की मृत्यु हो गई।''

भावानुवाद—''वर्ष 1974 में बेगम अख्तर ने ज़माने से पर्दा कर लिया।''

अथवा ''वर्ष 1974 में बेगम अख्तर पंच तत्व में विलीन हो गई।''

पैराग्राफ के माध्यम से होने वाला भावानुवाद है—

डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग ने 1990 में प्रकाशित संगीत पत्रिका के शोध अंक में लिखा है—

मूल वाक्य—''प्राचीन काल में संगीत में शोध का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति होता था, मध्यकाल में शोध का लक्ष्य रंजन हो गया और वर्तमान काल शोध का लक्ष्य मात्र नौकरी है, संक्षेप में भारतीय संगीत का यही इतिहास है।''

भावानुवाद—किसी विषय का विकास उसमें होने वाले शोध के माध्यम से होता है। संगीत कला का क्रमिक विकास भी उसमे निरंतर चलने वाली शोध प्रक्रिया का ही परिणाम है। संगीत में शोध की परम्परा बहुत पुरानी है लेकिन संगीत में शोध के उद्देश्य समय के साथ बदलते रहे है। जैसे प्राचीन काल में नाद या ध्वनि के माध्यम से ध्यान की विधियाँ खोजी गई, जिनसे होकर समाधि तक पहुँचा जा सकता था। जिसे जीवन का अंतिम लक्ष्य या मोक्ष भी कहा गया है। मध्यकाल आते-आते संगीत के स्वरूप में काफी बदलाव आ गया था। अब इसका प्रयोग मूलत: दरबारों में मनोरंजन के रूप में होने लगा था। राजा के मनोरंजन और उससे अर्थ लाभ के लिए नित नवीन तरीके खोजे जाते थे अर्थात अब संगीत में शोध का लक्ष्य मनोरंजन भर रह गया था। वर्तमान में संगीत संस्थागत शिक्षण व्यवस्था के अंतर्गत एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में संगीत शिक्षक होने के लिए संगीत में शोध की उपाधि को एक अनिवार्य योग्यता माना गया है। जिसके चलते प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में शोध हो रहे है। ये शोध शोधार्थी को नौकरी तक पहुँचाते है। स्पष्ट है वर्तमान में हो रहे शोध मात्र नौकरी पाने के साधन भर रह गए है। इस प्रकार हम देखते है कि संगीत में शोध के उद्देश्यों में समय के साथ एक व्यापक परिवर्तन होता रहा है। अत: भारतीय संगीत के क्रमिक इतिहास को शोध के उद्देश्यों में हुए क्रमिक परिवर्तनों की दृष्टि से भी देख सकते हैं।[1]

उद्धरण

उद्धरण के अंतर्गत किसी लेखक द्वारा व्यक्त किए गए विचारों आदि को उसी रूप में शब्दश: बिना किसी परिवर्तन के उसके नाम से अपने लेखन में प्रयुक्त करते है। उधृत की गई पंक्तियों को 'इन्वर्टड कॉमा' में लिखते है और उसका सन्दर्भ देते हैं जिससे प्लैगरिज़म से बचा जा सके। उदाहरण : डॉ. मुकेश गर्ग के अनुसार—''पारम्परिकता के आग्रह के कारण शास्त्रीय संगीत जल्दी नई चीजों को स्वीकार नहीं करता।''[2]

सन्दर्भ

किसी लेखक के विचारों या विषय से सम्बंधित तथ्यों का जब भावानुवाद करते हैं या उसका उद्धरण देते है तब उसका सन्दर्भ देने की आवश्यकता पड़ती है। जिस स्रोत से जानकारी लेते है उस स्रोत का पूर्ण उल्लेख लेखन के अंत में करना 'सन्दर्भ' देना कहलाता है। सन्दर्भ के माध्यम से हम दूसरे लेखकों के योगदान को महत्त्व देते हुए अपने लेखन में अंगीकार करते है। यह योगदान विचार, शब्द, शैली या सूचना आदि किसी भी रूप में हो सकता है। संदर्भ का संतुलित और व्यवस्थित प्रयोग लेखन के गुरुत्व और उसके महत्त्व दोनों को बढ़ता है। लेखन में सन्दर्भ की विविधता यह दर्शाती है कि विषय के उपलब्ध ज्ञानकोष से शोधकर्ता कितना परिचित है साथ ही यह शोधकर्ता की अध्ययन की गंभीरता, गहराई और उसके ज्ञान की विस्तृत परिधि को भी दर्शाती है। लेखन में सन्दर्भों को भली भाँति देना चाहिए ताकि पाठक सन्दर्भों के माध्यम से सही स्रोत तक पहुँच सके और उसका इस्तेमाल अपने अन्य या आगे के अध्ययन के लिए कर सके।[3]

सामान्यत: सन्दर्भ सूची लेखन के अंत में अकारादि क्रम में दी जाती है। लेखन में सन्दर्भ देने की कई सारी सन्दर्भ शैलियाँ प्रचलित है जैसे APA, MLA, Chicago आदि। यदि लेखक अपने लेखन में सन्दर्भ का प्रयोग नहीं करता है तो यह Intellectual Property Rights का उल्लंघन माना जाता है और उसका लेखन प्लैगरिज़्म की श्रेणी में आ जाता है, जोकि एक दंडनीय अपराध है।

सामान्यत: हम संगीत लेखन में निम्नलिखित स्रोतों से सन्दर्भ लेते हैं—

- पुस्तक और शैक्षणिक व सामान्य पत्रिकाएँ
- समाचार पत्र, पैमफ्लेट और ब्रोशर
- चलचित्र, डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म टेलीविज़न या आकाशवाणी कार्यक्रम या विज्ञापन
- अप्रकाशित-शोध प्रबंध व व्यक्तिगत डायरी
- ऑन लाइन सामग्री के अंतर्गत वेबसाइट, ब्लॉग, डिस्क्शन फोरम, सोशल मीडिया प्लैटफार्म आदि।
- ईमेल, पत्र, व्यक्तिगत साक्षात्कार, डायग्राम, चित्र, चार्ट आदि।

निम्नलिखित को सन्दर्भ देने की आवश्यकता नहीं है—

- किसी विषय या घटना पर व्यक्तिगत स्तर पर किए गए अवलोकन तथा अवलोकन के बाद निकले गए निष्कर्ष सन्दर्भ के अंतर्गत नहीं आते।
- किसी विषय से सम्बंधित व्यक्तिगत अनुभव, विचार, टिप्पणी, विश्लेषणात्मक व्याख्याएँ भी सन्दर्भ की परिधि में नहीं आते।
- किसी विषय से सम्बंधित सर्वमान्य सत्य, तथ्य तथा कथ्य के भी उल्लेख में सन्दर्भ देने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वह प्रत्येक व्यक्ति, जोकि उस विषय से सम्बंधित है, उसकी जानकारी में निश्चित तौर पर होगा ही, ऐसा माना जाता है। जैसे—संगीत में सात स्वर है, ताल संगीत का प्राण है, आदि।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ में प्रयुक्त किए गए स्रोतों (पुस्तक, लेख, आडियो, वीडियो आदि) की सूची जोकि लेख के अंत में अकारादि क्रम में दी जाती है, उसे सन्दर्भ ग्रन्थ सूची कहते हैं। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची के माध्यम से किसी विषय से सम्बंधित उपलब्ध ज्ञान कोश की जानकारी भी प्राप्त होती है।

पाद-टिप्पणी और सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में बहुत छोटा सा अंतर है। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में सन्दर्भ के अलावा वो सारे विचार, तथ्य, टिप्पणी आदि आते है जो लेखन में महत्त्वपूर्ण होते है।

Citation

अक्सर ऐसा देखा गया है कि शोधार्थी पूरा लेख लिखने के बाद लेख के अंत में सन्दर्भ ग्रन्थों की एक सूची दे देते है और अपने कार्य की इतिश्री समझ लेते है, जोकि ठीक नहीं है क्योंकि इस प्रकार से दी गयी सन्दर्भ ग्रन्थ सूची से यह स्पष्ट नहीं होता है कि शोधार्थी ने अपने लेखन में कहाँ -कहाँ और किन -किन लेखको को उधृत किया है तथा कौन सा विचार किस लेखक का है। इस समस्या के निस्तारण के लिए ही in-text citation का प्रयोग किया जाता है। In-text citation की सहायता से यह स्पष्ट होता है कि लेख में प्रयोग किए गए विचार, सूचना, तथ्य आदि किस किस स्रोत से लिए गए है और वह किन-किन लेखकों के है। Citation को हिंदी में दृष्टान्त या प्रमाण भी कहते है। Citation के माध्यम से किसी दूसरे व्यक्ति के कार्य की स्वीकृति प्रदान करते हुए उसे अपने शोध अथवा लेखन में प्रयोग करते है। लेखन के दौरान किसी एक अनुच्छेद के अंतर्गत एक या कभी-कभी एक से अधिक लेखकों के विचारों या उनके कार्यों का उल्लेख करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में Citation के माध्यम से प्रत्येक लेखक का नाम देते हुए चलते हैं। बीच-बीच में लेखकों के कार्यों की भी स्वीकृति देने की प्रक्रिया को in-text citation कहते हैं। In-text citation देने के कई प्रकार प्रचलित है। भावानुवाद या उद्धरण का सन्दर्भ देते समय में पैराग्राफ में 1, 2, 3.....अंकों का प्रयोग in-text citation के अंतर्गत आता है। विभिन्न Reference Styles (जैसे— APA, MLA, Chicago आदि) में अलग अलग तरह से citation दिया जाता है। Citation की इस प्रक्रिया से Plagiarism से आसानी से बचा जा सकता है। Citation का प्रयोग मुख्य रूप से भावानुवाद तथा उद्धरण देते समय स्वीकारोक्ति के लिया किया जाता है।

Footnote - Endnote

किसी स्रोत से ली गयी जानकारी सन्दर्भ के रूप में जब पृष्ठ के नीचे वाले हिस्से में अंको के साथ दी जाती है, उसे Footnote कहते है और जब यही जानकारी लेख के अंत में दी जाती है तो उसे Endnote कहते हैं। इसके अतिरिक्त किसी तकनीकी शब्द का अर्थ, उसकी व्याख्या या टिप्पणी आदि को भी अंक देकर Footnote या Endnote में शामिल करते हैं।

Plagiarism

किसी व्यक्ति के रचनात्मक कार्य (विचार, शब्द आदि) को बिना उसका श्रेय दिए अपने हित में किसी भी प्रकार से प्रयोग में लाना Plagiarism कहलाता है। पिछले कुछ वर्षों में Plagiarism ने गंभीर समस्या का रूप ले लिया है, जिससे Intellectual Property Rights का लगातार उल्लंघन बढ़ता जा रहा है। Plagiarism को अब शैक्षणिक अपराध की श्रेणी में रखा जाता है। अपने लेखन में प्रयोग की गयी सूचनाओं, तथ्यों आदि के स्रोतों का जानकारी न देना Plagiarism को बढ़ावा देता है। Plagiarism से बचने का एक ही उपाय है कि उसके प्रति जागरूकता बढ़ा ली जाए। किसी लेखक की बौद्धिक सम्पदा का सम्मान करते हुए उसका श्रेय ठीक तरीके से देकर Plagiarism से आसानी से बचा जा सकता है। शोध पत्र के अंत में मात्र सन्दर्भ ग्रंथों की सूची देने भर से शोधार्थी Plagiarism से पूरी तरह से नहीं बच सकता, उसे साथ ही Plagiarism भी देना चाहिए ताकि लेखक को उसका पूरा श्रेय मिल सके तथा सन्दर्भ स्रोत की पूरी जानकारी भी पाठकों तक पहुँच सके।[4]

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने भी उच्च शिक्षण संस्थानों में अकादमिक सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने तथा Plagiarism की रोकथाम के लिए जुलाई 2018 में एक अधिसूचना जारी की है। जिसका उद्देश्य शोध की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए Plagiarism की रोकथाम करना, उसके प्रति शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों, तथा सम्बंधित कर्मचारियों को इसके प्रति जागरूक करना है।[5] शोध-प्रबंध तथा शोध निबंध में एक निश्चित मात्रा से अधिक Plagiarism पाए जाने पर सजा का भी प्रावधान है।

अत: स्पष्ट है कि उपरोक्त चर्चा किए गए तकनीकी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शोध-पत्र लेखन किया जाए तो शोध-पत्र की गुणवत्ता तथा उसकी प्रमाणिकता को बढ़ाया जा सकता है। इससे विषय से सम्बंधित उलपब्ध ज्ञान कोष का पूरा उपयोग हो सकेगा तथा उसका समय के साथ मूल्यांकन भी होता रहेगा। लेखन कार्य Plagiarism से मुक्त होगा तथा भविष्य में संगीत शास्त्र के अध्ययन-अध्यापन को एक मजबूत आधार मिल सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संगीत, जनवरी-फरवरी 1990, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश
2. राष्ट्रीय संगोष्ठी स्मारिका, 2005, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, उ.प्र.
3. Verma, Amit Kumar, Research Methodology in Indian Music, Aayu Publications, New Delhi
4. University Grant Commission (Promotion of Academic Integrity and Prevention of Plagiarism in Higher Educational Institute Regulation, 2018
5. Sidhu, K.S., Methodology of Research in Education. New Delhi: Sterling Publishers Private Limited, 1984